सहर्ष तुम स्वीकार करो

(राष्ट्रीय साझा काव्य संग्रह)

संपादक

डॉ. खेदूभारती 'सत्येश'

सहर्ष तुम स्वीकार करो

संकलन/संपादन	:	डॉ. खेदूभारती 'सत्येश'
प्रथम संस्करण	:	2024
ISBN	:	978-93-5866-928-2
मुद्रक/प्रकाशक/ वितरक	:	धारा पब्लिकेशंस इंडिया
मूल्य	:	/- रु.

© कापीराईट	:	सर्वाधिकार सुरक्षित - लेखकाधीन

धारा पब्लिकेशंस इंडिया

धमतरी (छ.ग.) 493773 ☎ 9479207165

www.Dharapublicationsindia.com

Dharapublicationsindia@gmail.com

27. प्रेमचंद
28. गुलाब सिंह कंवर 'गुलाब'
29. सुरेश कुमार चंद्रा
30. शिवदत्त डोंगरे
31. बीना सिंह 'मंगल'
32. मंगल सिंह 'मंगल'
33. सुषमा चंद्रकांत
34. अंजू पांडे 'अश्रु'
35. डॉ राजेन्द्र सिंह
36. अनिल कुमार श्रीवास्तव
37. महाकवि डोरीलाल भास्कर
38. डेजी रानी मिश्रा
39. माधुरी मारकंडे
40. शोभा रतूड़ी
41. धर्मपाल सिंह मित्रा
42. पूर्णिमा कौशिक 'चमक'
43. डॉ खेदूभारती 'सत्येश'
44. प्रो. स्मिता शंकर
45. डॉ. बिप्पू रजक
46. प्रो. पंढरीनाथ पाटिल 'शिवांस'
47. डॉ. बंशीलाल हेमलाल गाड़ीलोहार
48. विद्यानंद प्रसाद व्याहुत
49. डॉ. राजेश गोयल
50. पी. रेखा कौशिक
51. डॉ. हेमलता विजय काटे
52. आदिल अहमद 'आदिल'
53. डॉ. रश्मि बी.वी.

जिंदगी यूं ही चलती रहेगी...

- डॉ. हेमलता काटे

जिंदगी यूं ही चलती रहेगी,
आंधी-तूफानों से मचलती रहेगी,
पर कितने भी आए आंधी-तूफान,
मचले न हमारे अरमान।
जिंदगी यूं ही चलती रहेगी,
गम-खुशियों की लहरें उठाती रहेगी
पर कितनी भी आए गम-खुशियां
बिखरें न हमारा आशियां।
जिंदगी यूं ही चलती रहेगी,
धूप-छांव तले पलती रहेगी,
चाहे छांव मिलें या धूप,
बदले न हमारा रूप।
जिंदगी यूं ही चलती रहेगी,
आंसुओं को बहाते रहेगी,
पर आंसुओं को हम बहने न दें,
खुशी के पल को हाथ से न गवा दे।
जिंदगी यूं ही चलती रहेगी,
इन फिक्रों से जुड़ती रहेगी,
हर फिक्र को धुंए में उड़ाते चलों,
मस्त मगन में यूं ही जीते चलो,
कारण जिंदगी यूं ही चलती रहेंगी।
जिंदगी यूं ही चलती रहेंगी...

मैं एक नारी हूं

- डॉ. हेमलता काटे

मैं एक घर संभालेवाली,
गृहिणी हूं,
मन को मोहने वाली,
मोहिनी भी हूं।
जीवन में संगीत भरनेवाली,
रागिनी भी हूं,
पल-पल साथ निभानेवाली,
सहचारिणी भी हूं।
भारतीय संस्कृति की,
आदर्श प्रतिमा सुलक्षणा भी हूं,
तो नारी के नए रूप के साथ,
कुलक्षणा भी बनी हूं।
कर्तव्य निभाने वाली,
अंतरिक्ष की अंतरिक्षा हूं,
तो संरक्षण करनेवाली,
संरक्षिका भी हूं।
न जाने मैं क्या-क्या हूं?
पर सबसे पहले एक नारी हूं।
जो कोमलता की पीर है।
भावनाओं की नीर है।
जीवन की क्षीर है।
कारण मैं एक नारी हूं....